पत्रदीपिका ॥

पहला भाग ॥

श्रीयुत मिस्टर डब्ल्यू हैंवडफोर्ड साहब बहादुर

सूबह अवध के डैरेक्टर आफ़ पब्लिक् इन्स्ट्रक्शन की

आज्ञानुसार ॥

अवध देशीय पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिये ॥

पण्डित कालीचरण

नारमलस्कूल के थर्ड मास्टर ने बनाई ॥

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई

सन् १८६८ ई०

पत्रदीपिका ॥

प्रथम भाग ॥

मुख्य सम्बन्धी रिश्तेदारों के पत्र व्यवहार के विषय में ॥

[प्रश्न पत्र]—शिष्य की ओर से गुरू को ॥

सिद्धि श्रीयुत महाराज गुरू जी श्री ६——— को——— का साष्टांग प्रणाम पहुंचे यहां कुशल है वहां सदां कुशल चाहिये।

बहुत दिनों से आपका कोई कृपा पत्र नहीं आया सो चित्त के आनन्द नहीं होता अब मैं आपके चरणों की कृपा से नैपाल के महाराज के यहां २५) रुपये महीने का नौकर होगया हूं महाराजा साहिब मुझ पर बड़ी कृपा रखते हैं उन्हों ने अपनी पाठशाला में मुझे संस्कृत पढ़ाने के अधिकार पर नियत किया है आपके पास कोई नैषध

ाव्यकी पुस्तक सटीक हो तो आप किसी लेखक
। लिखवा कर अथवा मोल मिलै तो मोल ले मेरे
ास भेजिये और ४०) रुपये की हुण्डी भेजता
ं उसमें पुस्तक के दाम देकर जो बाक़ी रहैं सो
हने दीजियेगा मैं कोई और पुस्तक मंगाऊंगा॥
शुभ मिती कार्त्तिक बदी २ सम्वत् १९२२

[उत्तर पत्र]—गुरु की ओर से शिष्य को॥

स्वस्ति श्री२ सेवाधिकारी शिष्य——को——
ा आशीर्वाद पहुंचे यहाँ कुशल है वहां कुशल
ाहिये।

आगे तुम्हारा कार्त्तिक बदी २ का लिखा हुआ
त्र आया हृत्तान्त मालूम हुआ और तुम्हारी २५)
रु० की जीविका सुनकर चित्त को बहुत आनन्द
हुआ और तुमने जो पुस्तक नैषधकाव्य की लिखी
सो हम तुमको ८) रु० में मोल लेकर भेजते हैं
और ४०) रु० की हुण्डी में से ३२) रु० बाक़ी
रहे सो हमने तुम्हारे नाम से हरीराम की दूकान
र जमा कर दिये हैं अब कोई और काम लिखोगे
ो भेज देंगे॥

शुभ मि० कार्त्तिक सुदी २ सम्वत् १९२२

[प्र०पत्र]—पुत्र की ओर से पिता को ॥

सिद्धि श्री सर्वोपमा योग्य पिताजी श्री ६—का——की साष्टाँग प्रणाम पहुँचे यहाँ कुशल है वहाँ सदा कुशल चाहिये ।

आगे बहुत दिन हुए कोई कृपा पत्र आपने नहीं भेजा आपने जाने के समय कहा था कि जब हम लाहौर में पहुँचें तो तुम हमको खत दिखवाना कि हम गवर्नमेण्ट स्कूल में जाकर वहाँ के विद्यार्थियों की अंगरेजी शिक्षा की रीति निश्चय करके सरकारी पुस्तकालय से अच्छी २ पुस्तकें जिनसे तुम्हारी विद्या की वृद्धि हो मोल लेकर भेजेंगे और एक बहुत अच्छी युक्ति विद्या के वृद्धि की वहाँ के बुद्धिवानों और अध्यापकों से निश्चय करके तुमको बतलावेंगे जिससे अंगरेजी भाषा में तुम बहुत शीघ्र व्युत्पत्ति प्राप्त करोगे इसलिये मैंने यह विनयपत्र आप की आज्ञा के अनुसार खत दिखाने के लिये भेजा है आप अपना सब वृत्तान्त अपने आनन्द से रहने का और मकान के पते समेत लिखकर हम सब लोगों को आनन्द दीजिये किमधिकम् विज्ञेषु ॥

मि० मार्गशिर बदी ४ सम्वत् १९२२

[उ०पत्र]—पिता की ओर से पुत्र को ॥

स्वस्ति श्री चिरंजीवि आज्ञानुकूल———को ———की आशिष पहुंचे यहां कुशल है वहां कुशल चाहिये ।

हम १३ जनवरी को लाहौर में दाखिल हुए फिर शहर और मकानों को देख कर गवर्नमेण्ट स्कूल भी देखा इस स्थान पर वास्तव में अच्छी शिक्षा होती है यहां मास्टरों से भी हमने मुलाक़ात की तो सब को शीलवान् पाया मुख्यकर यहां के अव्वल मास्टर तो बहुत शील युक्त और पण्डित मालूम होते हैं उनसे बहुतसी बातें हुईं तो हमको अंगरेजी के जल्दी सीखने की यह रीति मालूम हुई कि हिसाब बीजगणित और रेखागणित तो तुमको उर्दू भाषा में सीखना चाहिये क्योंकि ये विद्या की पुस्तकें हैं इनको तुम अपनी भाषा में अच्छी तरह समझ सक्ते हो फिर अंगरेजी की छोटी २ कहानियों की किताबें देखो तदनन्तर इतिहास और अदब की किताबें और लिखना और किसी को पढ़ाते भी रहना जिस्से कि पिछला सब याद रहै ॥

शुभ मि॰ मार्गशिर बदी १४ सम्वत् १९२२ ।

[प्र०पत्र]—छोटे भाई की ओर से बड़े भाई को ॥

सिद्धि श्री दादा भाई श्री ५——को——द
दण्डवत् पहुंचे यहां कुशल है वहां सदां कुश
चाहिये ॥
बिनय करता हूं कि आप का पत्र जो मेरे औ
सब लड़केवालों समेत चिरंजीवि हनुमन्त किशो
के बिवाह में संयुक्त होने के बिषय में रामप्रसा
के हाथों आया उस पत्र के देखने से बड़ा आन
हुआ परंतु आज कल हमारा हाथ बड़ा तङ्ग है
इस्से हम बड़े लज्जित हैं और मेरे वृत्तान्त के
आप भी जानते हैं मैं तो बहुत चाहता हूं कि तुम
को देखकर चिरंजीवि हनुमन्त किशोर के बिवा
का आनन्द देखूं परंतु लाचार हूं बिना सामा
के आ नहीं सक्ता ॥

अजमिति ता० २२ नवम्बर सन् १८६६ ई० ।

[उ०पत्र]—बड़े भाई की ओर से छोटे भाई को ॥

स्वस्ति श्री चिरंजीवि छोटे भाई——को—
का आशीर्वाद पहुंचे यहां कुशल है वहां कुश
चाहिये ।

तुम्हारा पत्र चिरंजीवि हनुमन्त किशोर

वाह में लाचारी से संयुक्त न होने के विषय में
या तुम्हारे तंग होने का कारण सच है इस
ये ५००) रु० की हुण्डी साह बनारसीदास की
कान पर भेजता हूं सो तुम अपनी सब तंगी को
र करके विवाह में सब लड़केवालों समेत आओ
ार अब हम तुम्हारा कोई उज़र नहीं सुनेंगे
वाह से १५ दिन पहिले आओ ढील मत करो॥
मि० पौष वदी ५ सम्बत् १९२३

[प्र०पत्र]—पोते की ओर से दादे को॥

सिद्धि श्री सर्वोपमा योग्य दादा जी श्री ६——
ा——की साष्टांग दण्डवत् पहुंचे यहां कुशल है
हां सदा कुशल चाहिये।

आगे बिदा होने के समय आप ने कहा था कि
गर तुम परिश्रम करके गणित विद्या सीख कर
टवारी के कागजात में अच्छा अभ्यास करलोगे तो
मको मेरठ के कमिश्नर साहबसे सिफारश कराके
ाई अच्छी नौकरी दिलवा देंगे इस कारण मैंने
हनत करके गणित और पटवारी के सब काग-
ात अच्छी तरह याद कर लिये हैं बल्कि ताज़ी
ात हिन्द भी बखूबी याद करली है अब किसी

अच्छे उहदे की सिफारश करा दीजिये और परीक्षा भी इन सब बातों में अच्छी तरह दे सक्ता हूं अगर आज्ञा हो तो आप के पास हाजिर हूं इसका उत्तर जल्दी से कृपा करियेगा मैं आपका हूं आप हमारे बड़े हैं बड़ाकिम् मि० माघ बदी ८ सम्वत् १९२४ ॥

[उ०पत्र]—दादे की ओर से पोते को ॥

स्वस्ति श्री चिरंजीवि पौत्र——को——का आशीर्वाद पहुंचे यहां कुशल है वहां कुशल चाहिये आगे तुम्हारा माघ बदी ८ का लिखा हुआ पत्र आया वृत्तान्त जो लिखा सो ठीक है मैं तुमसे चलते समय कह गया था सो तुमने वे सब बातें सीख ली हैं तो नौकरी जल्द तुम्हारी होगी आज कल कमिश्नर साहिब दौरे में हैं सो १५ दिन के पीछे आवेंगे तब मैं उनसे सिफारश करके और पूछ के तुमको बुलाऊंगा तुम अपनी पढ़ी हुई किताबों को फिर दुहरा लेना कदाचित् तुम्हारी परीक्षा ली जाय तो कसर न निकले मैं उक्त साहिब बहादुर के आते ही तुमको अवश्य बुलाऊंगा निसंदेह रहो शुभ मि० माघ बदी १४ सम्वत् १९२३

[प्र०पत्र]—भतीजे की ओर से चाचा को ॥

स्विद्ध श्री चाचा जी श्री ५——को——का प्रणाम पहुंचे यहां कुशल है वहां कुशल चाहिये। आपने बाबू साहिब के लिये जो चिट्ठी दी थी उसको लेकर मैं रेलसे उतरतेही उनके पास गया उन्होंने उसको पढ़कर मेरी बड़ी खागत की और आप से भी विशेष प्यार करते हैं अब मदरसे का हाल सुनिये मुझको प्रिन्सीपेल अर्थात् पाठशालाध्यक्ष के पास लेजाकर भरती करा दिया अब निश्चय है कि बाबू साहब की कृपा से रोटी कमाने का कुछ ढंग आजायगा प्रातःकाल श्री गंगा जी का स्नान और सायंकाल श्री विश्वेश्वर जी का दर्शन यह भी एक अलभ्य लाभ आप की कृपा से यहां के रहने से होता है घर में हमारा प्रणामाशिषसबसे यथोचित कह देना॥

मि० पौष बदी ३ सम्वत् १९२३।

[उ०पत्र]—चाचा की ओर से भतीजे को ॥

स्वस्ति श्री चिरंजीवि भतीजे——को——की आशिष पहुंचे यहां कुशल है वहां सदा कुशल चाहिये।

आगे तुम्हारा पौष बदी ३ का लिखा हुआ पत्र आया वृत्तान्त सुनकर अत्यन्त आनन्द हुआ और तुम्हारे ऊपर बाबू साहिब का स्नेह सुनकर बड़ाही सुख हुआ अब तुमको भी यही उचित है कि खूब परिश्रम करके विद्या पढ़ो जिससे बाबू साहिब और भी प्रसन्न रहैं और सदैव बाबू साहिब के कहने के अनुसार काम करना इनके ही प्रसन्न रहनेसे तुमको किसी समय तुम्हारी योग्यता से अधिक अधिकार मिल जायगा और जो कुछ खर्च की आवश्यकता हो तो हमको लिखना ॥

मि० फागुन बदी २ सम्बत् १९२३ ।

[प्र०पत्र]—साले के लड़के की ओर से फूफा को ॥

सिद्धि श्री सर्वोपमायोग्य फूफा जी श्रीई—— को——की दण्डवत् पहुँचे यहां के समाचार भले हैं तुम्हारे भले चाहियें ।

आगे मुझै बड़ा संदेह है कि आपने इस अवस्था में नौकरी क्या की मानो गृहस्थाश्रम त्याग करके चौथेपन में काशी बास किया आपकी पूर्व दशा लिख कर आप को गृहस्थाश्रम का स्मरण कराता हूं आपकी बाल्यावस्था पिता के माथे और युवा

अथवा दूसरे के माथे सुखचैन से गुजारो अब जो तुमको परमेश्वर ने लड़के वाले दिये और कोई सहारा नहीं रहा तो पराई तावेदारी करनी पड़ी इस निमित्त कि लड़के वालों का पालन हो परंतु नहीं मालूम कि वहां जाकर आपको क्या होगया कि आप अच्छे रोजगार पर हैं और लड़के वाले तंगी सहते हैं इतनी ही प्रार्थना मेरी बहुत समझना ॥

मि० कार्त्तिक सुदी ९ सम्वत् १९२१

[उ० पत्र]—फूफा की ओर से साले के पुत्र को ॥

स्वस्तिश्री सालपुत्र चिरंजीवि——को——की आशिष पहुंचे यहां के समाचार भले हैं तुम्हारे भले चाहियें ।

आगे कार्त्तिक सुदी ९ का लिखा पत्र आया हाल लिखा सो ठीक मेरा हाल यह है कि बेटा जी हमने जो तुमसे चलने के समय कह दिया था कि जातेही तुम अपनी भूआ को भेजदेना किस वास्ते कि हम हैदराबाद जाने वाले हैं यहां बैठे २ जो कुछ कमाया और पास का था सब खा गये तुम जानते हो कि बैठ कर खाने में तो कुबेर का भी

खुजाना नहीं रह सक्ता फिर हम तो मनुष्य हैं और वहां हीं हमारा गुणभी पूछा जायगा यहाँ तो कोई टके को भी नहीं पूछता और घरके लोगों बिना सब असबाब मट्टी होजायगा घरमें बैठना आलसियों का काम है ॥

मि० चैत्र बदी ५ सम्वत् १९२१

[प्र० पत्र]—दौहित्र की ओर से नाना को ॥

सिद्धि श्री सर्वोपमायोग्य नानाजी श्री ५——को ——की साष्टांग दण्डवत् पहुंचे यहाँ के समाचार भले हैं तुम्हारे भले चाहियें ।

आगे आपका कृपा पत्र आया उसके देखने से मैं बड़ा कृत कृत्य हुआ आपने जो मेरे लिये रघु-ज्जातक और बीजगणित की पुस्तक भेजी सो मुझे बड़ी आवश्यक थी और रघुवंश पढ़ता हूं अब विनय यह है कि आप सदैव कृपा करते रहिये और नानी से मेरा बहुत २ प्रणाम कह दीजियेगा और अपने आनन्दके समाचार लिखते रहियेगा ॥

शुभ मि० आषाढ़ बदी १ सम्वत् १९२०

[उ०पत्र]—नाना की ओर से दौहित्र को ॥

स्वस्ति श्री दौहित्र चिरंजीवि——को——का आशीर्वाद पहुंचे यहां कुशल है वहाँ कुशल चाहिये ।

आगे बहुत दिवस से तुम्हारे पठन पाठन का कुछ वृत्तान्त नहीं सुना सो अवश्य लिखना और रघुवंश काव्य तुम पूर्ण कर चुके होगे तदुपरि जो पढ़ो सो हमको लिखना हम जानते हैं कि कुछ वेदाध्ययन भी करना ज़रूर है किस वास्ते कि धर्म्म कर्म्म इसी से समझ पड़ता है आगे अपने माता पिता की प्रसन्नता का हाल लिखो और माघ के महीने में हमारी इच्छा है कि तुम्हारी माता को प्रयाग स्नान करने के लिये बुलावें इसका उत्तर तुम अपने हाथ से लिखना जिसमें तुम्हारी विद्या के पढ़ने का हमें भी कुछ ज्ञान हो ॥

मि० कार्त्तिक बदी १३ सम्वत् १९२० ।

[प्र०पत्र]—भानजे की ओर से मामा को ॥

सिद्धि श्री सर्वोपमायोग्य मामा जी श्री ५——को——की दण्डवत् पहुंचे यहां कुशल है वहां कुशल चाहिये ।

आगे आपने जो कपड़े का रोजगार हमारे साझे में करने को लिखा सो ठीक है रोजगारमें इतनी बातें जरूर चाहियें प्रथम तो घरका रुपया किस वास्ते कि ब्याज रुपये में नफा भर तो बोहरे की हो जायगी ब्याज की दर आज कल जबसे बड़ी महंगी हुई २) रु० सैंकड़े से कम नहीं लगती सो रुपया तो तुम्हारे पास पूरकस है फिर अपने हाथ की मिहनत दिसावर जाना माल खरीदना गुमाश्तों का कुछ भरोसा नहीं सो तुम अकेले ठहरे और हमारे पास न तौ रुपया है न इधर उधर फिरने की मिहनत कर सकें कहो साझा कैसे निबहैगा जो कुछ बन्दोबस्त होय तो हमको लिखना

मि० कार्त्तिक बदी ४ मंगलवार सम्वत् १९१८।

[उ०पत्र]—मामा की ओर से भानजे को॥

स्वस्तिश्री चिरंजीवि भानजे——को——की आशिष पहुंचे यहां कुशल है वहां कुशल चाहिये। आगे कार्त्तिक बदी ४ का तुम्हारा पत्र आया सो ठीक है सो रोजगार की सलाह तो पीछे करैंगे परंतु अब हमारे माघ बदी १० का विवाह चिरंजीवि माधोप्रसाद का ठहरा है सो मुन्नाजी तुमको लिखते हैं

कि बीबीको साथ लेकर विवाहसे दस पांच दिन पहले आओ क्योंकि तुम्हारे बिना कोई मंडपआदि कर्म्म नहीं होगा सो तुम १५ दिन पहले आओ और २०)रु० की हुण्डी भेजते हैं इसमें तुम आते समय १५) तथा २०) रु० का कोई शाली रूमाल भाटों के देने के लिये लेते आना और जल्द आना इस थोड़े लिखे को बहुतसा समझना ॥

मि० मार्गशिर सुदी २ सम्बत् १९१८

[प्र०पत्र]—जमाई की ओर से ससुर को ॥

सिद्धि श्री स्वसुर जी श्री पू——कौं——की दण्डवत् पहुंचे यहां कुशल है वहां कुशल चाहिये आगे आप हमारे धर्म्म के पिता हो इसलिये तुमसे कथनीय वा अकथनीय कुछ छिपाना न चाहिये बात यह है कि हम सदैव परदेश में रहा चाहते हैं और इतनी तनख्वाह नहीं जो नौकरों से कामलें और घरका भी खर्च चलावें और आपका धर्म्म यह था कि विवाह और द्विरागमन का करना और सिवाय इसके आपने इतने दिन और सहायता की परंतु अब नारायणने चार पैसे के हीलेसे लगा दिया है इसलिये उचित यही है कि कुछ दिवस एक साथ

रहैं और आप सब जानते हैं लिखने की कुछ आवश्यकता नहीं है जैसा मुनासिब समझें वैसा करियेगा ॥

शुभ मि० श्रावण सुदी २ सम्वत् १९२२

[ष०पत्र]—ससुर की ओर से जमाई को ॥

स्वस्ति श्री चिरंजीवि जामाता——को——की आशिष पहुंचे यहां कुशल है वहां कुशल चाहिये। आगे श्रावण सुदी २ का लिखा पत्र आया उसके देखने से बडाही आनन्द और मिलने के समान सुख हुआ और तुम्हारे रोजगार लगने से बड़ा चैन हुआ और परदेश में सच कहते हो कि बड़े २ कष्ट हैं सो हम तुम्हारे लड़के वालों को चिरंजीवि दयाराम के साथ तुम्हारे पास भेज देते हैं और सदैव अपने आनन्द के समाचार लिखते रहना ॥

शुभ मि० क्वार सुदी १५ सम्वत् १९२२

[प्र०पत्र]—साले की ओर से बहनोई को ॥

सिद्धि श्री सर्वोपमायोग्य जीजा जी श्री ५——को——की दण्डवत् पहुंचे यहां कुशल है वहां कुशल चाहिये।

आप फ़ैज़ाबाद जाते समय कह गये थे कि कोई हज़ार बारहसौ रु० के मोल का मकान ख़्वाजह हैदर अली दारोगा के समीप मिले तो मोल लेना आप के कहने के अनुसार ध्यान में था सो इन दिनों लाला गुरुसहाय एक मंज़िला संगीन मकान उक्त ख़्वाजह साहब के मकान के समीप १३००) रु० में बेचते हैं अगर स्वीकार हो तो उस हवेली का बयनामा लिखवा रजिस्टरी करवा के तेरहसौ रु० उक्त लाला साहिब को दे दिये जांय ॥

मि० अगहन बदी १ सम्वत् १९२३

[उ०पत्र]—मकानोंई की ओर से साले को ॥

स्वस्ति श्री सालमक योग्य——को——की दण्डवत् पहुंचे यहां कुशल है वहां सदा कुशल चाहिये आप का अगहन बदी १ का लिखा पत्र आया बड़ा आनन्द हुआ उसमें जो तुमने लिखा कि लाला गुरुसहाय का संगीन मकान ख़्वाजह साहब के समीप तेरहसौ रु० में बिकता है वह हमारे रहने के लायक है तो मकान का बयनामा और रजिस्टरी हमारे नाम कराके उक्त लाला साहब

को सप्ता देकर उस कागज को हमारे पास भेज दो ॥

शुभ मि० अगहन सुदी ३ सम्वत् १९२०

[प०पत्र]—मित्र के नाम ॥

स्वस्ति श्री उचितोपमायोग्य मित्रवर्य श्री३——को——का नमस्कार पहुंचे यहाँ कुशल है वहां कुशल चाहिये।

आगे मित्र बहुत दिनों से कोई पत्र आप का नहीं आया परंतु मित्रों के पत्र द्वारा ज्ञात हुआ कि आप कोई मकान बनवाते हैं इसलिये मित्रता पूर्वक लिखता हूं कि लाहौर के मकान के माफिक कभी मत बनवाना जहां तक हो मकान का सहन खुलासा और हवादार और तीनों ऋतु के मकान का भी ध्यान कर लेना और रसोई का मकान ऐसी ओर बनवाना जिसका धुआं मकान को काला न कर सके घोड़े गाय बैल के बांधने का भी स्थान खुला हुआ रखियेगा और जनाने मकान के पासही एक मर्दाना मकान बैठने उठने का बनवाना और मर्दानेही मकान में एक कुआ भी अवश्य २ बनवाना जिससे पानी का आराम रहे

और दालान का रुख उत्तर ओर को करना और अगर कुछ रुपये की आवश्यकता हो तो निस्सन्देह लिखना संकोच न करना मैं यहां से भेज दूंगा ॥

शुभ मि० चैत्र बदी ४ सम्वत् १९२२

[उ०पत्र]—मित्र की ओर से मित्र को ॥

स्वस्तिश्री उचितोपमा योग्य मित्रवर्य श्री३—— को——का नमस्कार पहुंचे यहां कुशल है वहां कुशल चाहिये।

आगे आप का चैत्र बदी ४ का लिखा पत्र आया छाती से लगाया बड़ा स्नेह उत्पन्न हुआ मित्र आप तो बड़ी कृपा करते हो जो ऐसी २ बातें बतलाते हो मेरा कसूर माफ करना बहुत दिनों से कम फुरसत के सबब चिट्ठी भेज न सका मैं मकान तो बनवाता हूं और आपके लिखे के माफिकही सब मकान बनवाऊंगा और मित्रवर्य रुपये के बाबत जो आपने लिखा सो आपका तो बड़ाही भरोसा है परंतु तुम्हारी कृपा से इसका सामान इकट्ठा कर लिया है अगर जरूरत होगी तो आपको लिखूंगा ॥

शुभ मि० वैशाख बदी ८ सम्वत् १९२२

दूसरा भाग ॥

पुरुष और स्त्री सम्बन्धी रिश्तेदारी के पत्र व्यवहार के विषय में ॥

[प्रथम पत्र]—शिष्य की ओर से गुरुपत्नी को ॥

सिद्धि श्री युत——शुभस्थानेस्थ सर्वोपमा योग्य सर्व भाव पूजनीय गुरुपत्नी श्री ६——की——की साष्टांग दण्डवत अत्र कुशलं तत्रास्तु ।

श्री माताजी महारानी जब से मैं गुरु महाराज से दो अक्षर सीखकर अपने घर आया तब से मैं ने कई पत्र भेजे परंतु आपका कोई कृपा पत्र नहीं आया इस से चित्त में बड़ा खेद है जान पड़ता है कि आप मुझ से अप्रसन्न हैं मैं तो आप का वही लड़का हूं कृपा रखिये और मैंने दो जोड़े वस्त्र एक आपको और एक गुरु जी महाराज को भेजा सो ग्रहण करके कृपा पूर्वक इसकी रसीद भेज दीजियेगा और मुझे अपना अनुचर समझ कर मेरे लायक काम की आज्ञा करती रहियेगा ॥

शुभ मिती कार्त्तिक बदी १ सम्वत् १९२१

[७॰पत्र]—गुरु पत्नी की ओर से शिष्य को ॥

स्वस्ति श्रीयुत——शुभस्थानेस्थ आज्ञानुयायी गुरुभक्ति परायण शिष्य श्री ३——जी——को आशिष पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु ।

आगे बेटा जी तुम्हारा पत्र कार्त्तिक बदी १ का लिखा आया वृत्तान्त विदित हुआ और बेटा जो तुम्हारे पास कोई पत्र हमारा नहीं पहुंचा इसका यह कारण है कि मैं दो बरस से काशी जी में हूं और तुम्हारे गुरू जी किसी पुरश्चरण में रहते हैं सो सावकाश नहीं हुआ और तुम्हारे भेजे हुए वस्त्र आये सुना जो तुम सब लायक हो ईश्वर तुम्हारी अधिक वृद्धि करै हम तुम पर बहुत प्रसन्न हैं ॥

शुभ मि॰ अगहन बदी १० सम्वत् १९२३ ॥

[८॰ पत्र]—पुत्र की ओर से माता को ॥

सिद्धि श्री मति—सर्वोपमायोग्य माता जी श्री ६——जी——को दण्डवत् पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु

विनय यह है कि जिस दिन से आप लाहौर को पधारी हैं सब छोटे बड़े आप का स्मरण करते हैं आप कह गई थीं कि एक महीने पीछे मैं चली

आज गोयो दो महीने व्यतीत हुए अब तक आप ने कोई देर होने का कारण भी नहीं लिखी यहां पर सुन्ने में आया है कि वहां के डैरेक्टर साहब बहादुर के दफ्तर में स्त्रियों की शिक्षा के वास्ते कई पुस्तकें उर्दू भाषा में बनी हैं उन सब में से उपकारी शिक्षा छप चुकी है वह किताब बहिन के लिये मोल लेके अवश्य भेज दीजिये और बड़ी बहिन उर्दू भाषा में अधिक परिश्रम करनी चाहती हैं इसलिये उनको एक जिल्द वार्त्तालाप करने के पत्रों की भी लेती आवें और आप जल्दी आइये और आने में देर हो तो देर का कारण लिखिये जिस्से हमको खात्त्री हो। मि० क्वार बदी ५ सम्वत् १९२०

[उ०पत्र]—माता की ओर से पुत्र को॥

स्वस्ति श्री चरण सेवाधिकारी पुत्र——को—— की आशिष पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु।

आगे बेटा तुम्हारी चिट्ठी कार्त्तिक बदी १ की लिखी आई उसको पढ़कर बड़ा आनन्द हुआ मैं कह तो गई थी परंतु वर्षा ऋतु में यहां नदियां बहुत बढ़ीं इस कारण लाचारी से न आ सकी

अब नदियां उतरीं और रस्ते जारी हुए सो तुम्हारी लिखी हुई किताबें लेकर आऊंगी और तुम्हारे वास्ते एक पसीने का रूमाल भी लाऊंगी॥

शुभ मि० कार्त्तिक बदी ८ सम्वत् १९२०

[प्र०पत्र]—पौत्र की ओर से दादी को॥

सिद्धि श्री मति दादी जी श्री ६——को——का साष्टांग प्रणाम पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु।

आगे बहुत दिनों से आप ने मुझे कोई छपा पत्र नहीं भेजा और तुम कह गई थीं कि मैं मथुरा में आते ही तेरे लिये मथुरा के अंगोछे और प्रसाद भेजूंगी सो अब तक नहीं भेजी और कहा था कि मैं १५ दिन में बनयात्रा करके आजाऊंगी सो एक महीना होगया अब जल्दी आओ और चाचा जी इलाहाबाद जाने वाले हैं उनको एक मथुरा की बहुत लम्बी डोर लेती आना और मेरे लिये अंगोछे और प्रसाद के सिवाय कुछ थोड़ी सी मथुरा की खुरचन भी लाना इनसब चीजों को लेती हुई जल्दी से आओ॥

शुभ मि० आषाढ़ बदी १२ सम्वत् १९२०

[७.पत्र]—दादी की ओर से पौत्र को ॥

स्वस्ति श्रीयुत आज्ञानुकूल पौत्र——को——को आशिष पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु ।

बेटा तुम्हारी आषाढ़ बदी १२ की लिखी चिट्ठी आई बड़ा चित्त प्रसन्न हुआ मेरा मन तुम्हीं में लगा रहता है और थोड़े दिनों मे बीमार होगई थी अब आनन्द है सो मैं जल्दी ही बनयात्रा से निबट कर गोकुल जी और दाऊ जी के दर्शन करती हुई आमी घाट उतरूंगी और तुमनें जो २ चीजें लिखीं सो लेती आऊंगी ॥

शुभ मि० आषाढ़ बदी १ सम्वत् १९२०

[८.पत्र]—देवर की ओर से भावज को ॥

स्वस्ति श्रीयुत उचितोपमा योग्य भावी साहब——को——को प्रणाम पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु

भावी साहब आप को इतनी हमारे ऊपर निठुरता न चाहिये भाई साहब जब देहली गये थे तो मुझसे कह गये थे कि तुम अपनी भावी के पास चिट्ठी भेज कर जो २ उनको वस्तु चाहिये मंगवा देना सो मैंने भाई साहबके कहनेके माफिक कई चिट्ठी भेजीं परंतु किसी का जवाब न आया

और न कोई फर्मायश आई हम तुम्हारे लड़के के समान हैं जैसी आज्ञा करो वह करैं ॥

शुभ मि० माघ बदी ५ सम्बत् १९२१

[उ॰पत्र]—भावज की ओर से देवर को ॥

स्वस्ति श्रीयुत शुभस्थानेस्थ सर्वोपमायोग्य देवर ——को——की आशिष पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु आगे तुम्हारा माघ बदी ५ का लिखा हुआ पत्र आया वृत्तान्त जाना तुमतो हमारे बड़े प्रिय हो मुझ से भी तुम्हारे भाई चलते समय कहगये थे कि जो कुछ आवश्यक हो सो तुम छोटे भाई से लिख कर मंगा लेना परंतु मुझे अभी तक कोई चीज आवश्यक न थी इस्से नहीं चिट्ठी लिखी परंतु अब गरमी आगई है सो मैंने सुना है कि आगरे की दरी बहुत अच्छी बनती हैं सो एक पलंग की दरी बहुत अच्छी सी भेजना ॥

शुभ मि० चैत्र बदी १४ सम्बत् १९२१

[प्र॰पत्र]—भतीजे की ओर से चाची को ॥

सिद्धि श्रीयुतशुभस्थानेस्थ सर्वोपमा योग्य चाची जी श्री ५——को——की साष्टांग दण्डवत् अत्र कुशलं तत्रास्तु ।

आगे चाची तुमको विनय पूर्वक लिखता हूं
कि आप हेवीदीन छोटे भाई को क्यों नहीं गवर्न
मेंट कालेज में भरती करादेतीं वह बुद्धिमान है
बहुत जल्दी पढ़ैगा और चाचा जीभी न मालूम
क्यों भूले बैठे हैं जो उसको नहीं पढ़ाते अगर
भरती कराओ तो मैं साहब से सिफारस करदूं
वहां जल्दी से पढ़कर सौ पचास रुपये का नौकर
होजायगा और आज कल अंगरेजी पढ़ाना
लड़कों को चाहिये क्यों कि उसकी बड़ी प्रतिष्ठा
है यथा राजा तथा प्रजा होना चाहिये ॥

शुभ मि० बैशाष बदी ४ सम्बत् १९२२

[उ०पत्र]—चाची की ओर से भतीजे को ॥

स्वस्तिश्री युत चिरंजीवि भतीजे——को
का आशीर्वाद पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु ।
तुम्हारा बैशाख बदी ४ का लिखा पत्र आया
वृत्तान्त मालूम हुआ बेटा तुमतो बड़े लायक हो
और हमारे हित की बातें लिखते हो परंतु
तुम्हारे भैया की तबियत बहुत दिनों से मांदीसी
रहती है इस कारण भरती नहीं करवाया
देह में कुछ बल आवै तो भरती करवा दूं औा

तुम अपने साहब से भी सिफारश करदेना ॥

शुभ मि० ज्येष्ट बदी १३ सम्वत् १९२२

[प्र०पत्र]—भतीजे की ओर से फूफी को ॥

सिद्धि श्रीयुत—शुभस्थानेस्थ सर्वोपमायोग्य फूफी जी श्री ६—को—की दण्डवत अत्र कुशलं तत्रास्तु।

आगे फूफी तुम इतने दिन से न तो आप आईं और न कोई चिट्ठी पत्री भेजी मालूम होता है कि आप हम सबसे खुफा हो और हम सब तुम्हारेही हैं बैशाख में तुम्हारे भतीजे आनन्दी लाल भैया का इटावे से बिवाह ठहरा है सो तुम फागुन तथा चैत तक आजाओ क्यों कि तुम्ही तो हमारी बड़ी बूढ़ी और मान्य हो सो अवश्य आओ अगर सवारी न हो तो सवारी भेज दें और फूफा जी चाहैं संग आवें अथवा कुछ उनको जरूरी काम हो तो बिवाह से १५ दिन पहले आवैं ॥

मि० माघ सुदी १४ सम्वत् १९२०

[उ०पत्र]—फूफी की ओर से भतीजे को ॥

स्वस्ति श्री युत—शुभस्थानेस्थ सर्व प्रिय चिरंजीवि भतीजे—को—की आशिष पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु

आगे माघ सुदी १४ का लिखा हुआ पत्र चिरंजीवि आनन्दी लाल के विवाह के मढ़े आया देख कर बड़ा सुख हुआ सुन्ना जी मैं गुस्सा नहीं हूं बहुत दिन से तुम्हारे फूफा की तबियत अच्छी नहीं थी अब आराम हुआ है सो मैं विवाह से १५ तथा २० दिन पहले आऊंगी और विवाह के समय मंडप के दिन तुम्हारे फूफा आ जांयगे और जो कुछ काम यहां का हो सो भी लिखना ॥

शुभ मि० फागुन बदी ५ सम्वत् १९२०

[प्र०पत्र]—भानजे की ओर से मामी को ॥

सिद्धि श्रीयुत——शुभस्थानेस्थ उचितोपमा योग्य मामी जी ——को——की राम राम पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु ।

मामी बहुत दिनों से मैने चाहा कि तुम से मिलूं परंतु ऐसा कोई योग नहीं बनता और मामा जी तो हमसे मिलके अम्बतसर को गये हैं और यह कह गये हैं कि तुम अपनी मामी को यह लिख भेजना कि जब तक मैं न आऊं तब तक तुम बीबी केही पास रहो अकेला रहना अच्छा नहीं है यहां तो अपने भानजों में हिल मिल

कर रहोगी और हमको भी विश्वास रहैगा इस कारण हम लिखते हैं कि तुमको हम पर स्नेह हो तो आनन्द से हमारी मालम के सहश रहो आगे जैसा उचित हो को लिखना ॥

शुभ मि० कार्तिक सुदी १३ सम्वत् १९२१

[उ०पत्र]—मामी की ओर से भानजे को ॥

स्वस्ति श्रीयुत चिरंजीवि भानजे——को——को आशिष पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु ।
आगे तुम्हारा कार्तिक सुदी १३ का लिखा हुआ पत्र आया देख कर छाती बड़ी शीतल हुई और बेटा जी तुम तो हमारे लड़के के तुल्यही हो और लायक वरहो जो ऐसा हमको लिखते हो और तुम्हारे मामा भी तुमको लायक समझ कर ऐसा कह गये परंतु यह तो बताओ कि बीबी की भी मरजी है क्यों कि वे हमारी पूज्य और बड़ी हैं जैसा हमसे चाहैं वैसा मैं करूं ॥

शुभ मि० अगहन बदी ११ सम्वत् १९२१

[प्र०पत्र]—रोगिस की ओर से नानी को ॥

सिद्धि श्री——शुभस्थानेस्थ सर्वोपमायोग्य नानी

श्री——को——की प्रणाम यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ।

आगे नानी तुम जबसे जैपुर गई हौ तबसे कोई चिट्ठी नहीं आई और तुमने तो यही कहा था कि मैं पुष्कर जी स्नान करिकै शीघ्र ही आजाऊंगी सो तुम शीघ्र आओ और जब वहां से चलो तो दो चादरे और दो चूंदरी अम्मा को लेती आना और कोई जैपुर की रंगी पगड़ी मेरे लिये लाना॥

शुभ मि० वैशाख बदी ५ संवत् १९२३

[उ०पत्र]—नानी की ओर से दौहित्र को॥

स्वस्ति श्री——शुभस्थाने चिरंजीवि आज्ञानुकूल दौहित्र——को——की आशिष पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ।

आगे तुम्हारी वैशाख बदी ५ की चिट्ठी आई हाल मालूम हुआ सुनो जी यहां गनगौर का बड़ा मेला होता है उसके देखने के लिये तुम्हारे मामा वहां रह गये और चले नहीं इसी से देर होगई अब मैं पुष्कर स्नान करकै जल्दी आऊंगी मेरा जी तुम्हारे और तुम्हारी मा के देखने को

भटके हैं सो जानोगे ॥ शुभ मि० जेठ बदी ११ सम्बत् १९२३

[प्र० पत्र]—बहिन के बेटे की ओर से मौसी को ॥

सिद्धि श्री—शुभस्थाने सर्वोपमायोग्य मौसी जी ——को——का प्रणाम यहाँ आनन्द है वहां आनन्द चाहिये।

मौसी हमारे पास मौसा जी की चिट्ठी अलवर से आई है उसमें लिखा है कि हम बहुत प्रसन्न हैं और अपनी मौसी से भी कह देना कि मैं २५ तथा ३० दिन पीछे सब कामों से निबट कर आऊंगा सो तुमको लिखता हूं कि मौसा जी ने लिखा है कि अगर तुम्हारी मौसी कुछ खर्च चाहै तो तुम दे देना सो मौसी जो कुछ खर्च या और कोई हमारे लायक काम हो सो लिखना हम तुरन्त करेंगे जो खर्च चाहिये तो भेजूं और हमारे भैयाओं से प्रणामाशिष कह दीजियो ॥

शुभ मि० बैसाख बदी ९ सम्बत् १९१९

[प्र० पत्र]—मौसी की ओर से बहिन के बेटे को ॥

स्वस्तिश्री—शुभस्थाने सर्वोपमायोग्य चिरंजीवि

——को——की आशिष पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये।

आगे वैशाख वदी ९ का लिखा पत्र आया वृत्तान्त जाना और बेटा तुमने अपने मौसा के सुख समाचार सुनाकर मेरे चित्त को बड़ा आनन्द दिया तुम सुपात्र हो भगवान् तुम्हारी हजारी उमर करैं मुन्ना जी खर्च मेरे पास अभी महीने भर तक को तो है फिर तेरे मौसा आई जांयगे कदाचित् बेटा तुम्हारे मौसा १ महीने में न आवैं तो १०) रु० खर्च को भेजि दीजियो और सब छोटे बड़ों को प्रणामाशिष ॥

शुभ मि० ज्येष्ट वदी १ सम्वत् १९२१

तीसरा भाग ॥

स्त्रियों की ओर से स्त्रियों केही विषय में ॥

[प्र॰पत्र]—माता की ओर से बेटी को ॥

स्वस्ति श्री आज्ञानुकूल बेटी——को——की आशिष पहुंचे ॥

बेटी मेरा चित्त तुझ में बहुत भटके है सो एक बिरियां आजा मैं बहुत रोगिनी हूं कहीं मरजाऊंगी तो मेरा जी तुझी में रहैगा इससे शीघ्र आइयो और तेरा भैया भी तुझको बहुत याद करै है और मूल बात यह है कि जो मैं ज़रा भी अच्छी हो जाऊंगी तो गणेश जी का उद्यापन करूंगी सो तुझेही देना बिचारा है मैंने सब तैयारी कर रक्खी है ॥

शुभ मि॰ आषाढ़ बदी १ सम्बत् १९२०

[उ॰पत्र]—बेटी की ओर से माता को ॥

सिद्ध श्री युत—शुभस्थाने सर्वोपमायोग्य मा जी श्री ६——को——का मिलना पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ।

आगे मा मैं बहुत शीघ्र आऊंगी और भैयाने इतने दिनों से मुझे नहीं बुलाया और मैं कुछ तेरे

उद्यापन के लोभ से नहीं आऊंगी मैं भी तुझे देखना और भैया से मिलना चाहूं हूं और मा जो तू कहै तो मैं दिल्ली से भैया के लिये अच्छी टोपियां और चीरे लेती आऊं यहां चीरे अच्छे रंगे जांय हैं और टोपियों पै कलाबत्तून यहां बड़ी चतुराई से बहुत अच्छा और सस्ता लगाते हैं यहां की टोपी का सुन्दर काम होता है ॥

शुभ मि० आषाढ़ सुदी २ सम्वत् १९२०

[प्र०पत्र]—दादी की ओर से पोती को ॥

स्वस्ति श्री——शुभस्थाने कुलतारा पोती——को——का आशिष पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ।

आगे बिटिया बहुत दिन से तुम्हारी कोई चिट्ठी नहीं आई इसे तुम्हारा सुख समाचार नहीं पाया और बेटी जल्दी से अपने आनन्द के समाचार लिखना मुझे स्वप्न हुआ है कि कुछ तेरी देह में रोग हुआ सो मेरा यह सन्देह तेरी चिट्ठी बिन नहीं जायगा और बेटी तेरे बाप ने एक गोदान किया था सो तुझी को दियाहै उसके

रुपयों की हुण्डी भेजूं हूं सो लेकर रसीद जल्दी भेजियो और वहां की आब हवा तुमको अच्छी है या नहीं सो लिखना ॥

शुभ मि० भाद्र पद कृष्णा २ सम्वत् १९२१

[उ०पत्र]—पोती की ओर से दादी को ॥

सिद्धि श्री युत——शुभस्थाने सर्वोपमा योग्य दादी श्री ५——को——का मिलना पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये।

आगे दादी आपकी भाद्र पद कृष्णा ४ को लिखी चिट्ठी आई वृत्तान्त मालूम हुआ और दादी तुमने जो स्वप्न में मुझै बीमार देखा सो सच मुच ठीक हुआ इस्से जाना गया कि तुम्हारी मेरे ऊपर चित्त से दया रहती है क्यों कि स्वप्न में बहुधा वही दीखता है जो पहले कभी किया हो अथवा मनमें बिचारा हो और यहां की आब हवा अभी तक मुझै नहीं माफकत आई और पिता को भी मेरा बहुत २ दण्डवत् कहना हुण्डी आई और रुपये भी वसूल कर लिये ॥

शुभ मि० भाद्र पद कृष्णा १४ सम्वत् १९२१

इसी प्रकार परदादी को भी जानो ॥

[प्र०पत्र]—देवरानी की ओर से जिठानी को॥

सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्थ उचितोपमा योग्य जिठानी जी श्री ५——को——का पैरौं पड़ना पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये॥

आगे जिठानी जी तुम्हारे पास कई चिट्ठियां भेजी परंतु उत्तर किसी का भी नहीं आया क्या मुझसे तुम अप्रसन्न हो मैं तो तुम्हारी आज्ञा में हूं और तुम्हारे देवर भी तुम्हारी स्तुति किया करैं हैं और भाभी जी नहीं हैं तो हमारी बड़ी बूढ़ी तुमहीं हो मैं चिरंजीव ब्रजलाल का मूडन कराया चाहती हूं हमारे मूडन गङ्गा पर होता है वह किस महीने में होता है सो लिखना और मूडने में तुम्हें भी आना होगा मैं अभी से बुलावा दे रखती हूं॥

शुभ मि० फागुन बदी ३ सम्वत् १९२०

[उ०पत्र]—जिठानी की ओर से देवरानी को॥

स्वस्ति श्री—शुभस्थानेस्थ उचितोपमायोग्य देवरानी——को——का मिलना पहुंचे यहां आनंद है वहां आनन्द चाहिये।

आगे तुम्हारी फागुन बदी ३ की लिखी चिट्ठी आई समाचार जाने और बोर जो तुमने लिखा कि

मने कई चिट्ठियां भेजीं सो मेरे पास इस चिट्ठी के सिवाय पहिले कोई चिट्ठी नहीं आई और चिरंजीवि ब्रजलाल का मूडन जो करने की इच्छा है तो रामघाट मैं चलिये। और समय परमैं भी अवश्य पहुंचूंगी चलो इसी बहाने गंगा का स्नान तो होगा और मूडन सदैव अगहन और फागुन और बैशाख में होता है ॥

शुभ मि० चैत्र सुदी २ सम्वत् १९२०

[प्र०पत्र]—ननद की ओर से भावज को ॥

स्वस्ति श्री युत—शुभस्थाने विराजमान भावज—को——का मिलना पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ।

भाभी बहुत दिन से भैया को मैंने नहीं देखा सो देखना चाहती हूं सो भैया से कह देना जो यमद्वितीया को आजावैं यहां मथुरा जी में यमद्वितीया को विश्राम घाट पर स्नान करने का बड़ा माहात्म्य है और उस दिन बहन के यहां भोजन करना चाहिये सो वह जरूर २ आवे और जो न आवे तो मैं अगहन में आऊंगी और मेरे माघ में रुक्मा बीबी का विवाह है सो भाभी तुमको और भैया को दोनों को आना पड़ैगा भात

न्योतने के बहाने आऊंगी सो भैया से भी मिलि आऊंगी ॥

शुभ मि० आश्विन शुदी १५ सम्वत् १९२१

[उ०पत्र]—भावज की ओर से ननद को ॥

सिद्धि श्री युत—शुभस्थाने विराज मान कुल मान्या ननद——को——का पैरों पड़ना पहुंचे यहां आनन्द है वहां अनन्द चाहिये।

आगे बीबी जी तुम्हारा पत्र आया पढ़ कर छाती शीतल झई क्योंकि तुम हमारी कुल पुज्य होके इतना स्नेह करोहो और बीबीजी तुम्हारे भैया तो यमद्वितीया को आवेंगे और उस दिन मथुरा में विश्रान्त पर स्नान होगा और भोजन तुम्हारे ही घर करेंगे परंतु तुमने जो अगहन में आने को कहा है सो अवश्य आना मुझे भी तुमसे बझत सी बातें पूछनी हैं और तुम्हारी बीबी के विवाह की भी सलाह करेंगे सो तुम सौ काम छोड़ कर आना और मुझे भी अपनीही समझना तुम हमारी बूढ़ी और मान्य हो ॥

शुभ मि० कार्त्तिक बदी २ सम्वत् १९२१

[प्र०पत्र]—धेवती की ओर से नानी को॥

सिद्धि श्रीयुत शुभस्थानेस्थ सर्वोपमा योग्य नानी श्री ५——को——का मिलना पहुंचे यहाँ आनन्द है वहां आनन्द चाहिये।

नानी जब से तुम वृन्दावन गई हो तभी से मुझे ज्वर आता है सो तुम जल्दी से आओ और अम्मा भी कुछ दुखी होरही है सो तुम्हारे आने से सब को आनंद हो जायगा और वहाँ से चलो तो एक लोई का जोड़ा चार तथा पाँच रुपये का लेती आना मेरे पास कोई ऊर्ण वस्त्र नहीं है और एक ऊर्ण वस्त्र सदैव गृहस्त को रखना चाहिये और मथुरा से एक गंगा जमुनी धोती चौके को लम्बी चौड़ी सी एक जोड़ी लाना और कंठी भी लाना॥ शुभ मि० मार्गशिर वदी २ सम्वत् १९२०

[उ०पत्र]—नानी की ओर से धेवती को॥

स्वस्ति श्रीयुत—शुभस्थाने परम पूज्या धेवती बेटी——को——की आशिष पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये।

आगे मार्गशिर वदी २ की लिखी पत्री आई समाचार जाने बेटी तुम बीमार होगई हो तो

से रहना और किसी घर के आदमी को हाथों बाबू बालमुकुन्द लाल डाक्टर साहब की औषध खाना उनके हाथ में ईश्वर ने यश दिया है वे बड़े भले मनुष्य हैं और सबका इलाज मन लगा कर करते हैं उनकी तीन पुड़ियाओं में कैसाही ज्वर हो, जाताही रहताहै सो और किसी हकीम या बैद्य की औषध मत करना और मैं भी जल्दी आऊं हूं तुम्हारे लिखी चीजों को भी लेती आऊंगी ॥

शुभ मि० मार्गशिर बदी १२ सम्बत् १९२०

[प्र०पत्र]—भानजे की ओर से मामी को ॥

सिद्धि श्री ५—शुभस्थानेस्य सर्वोपमा योग्य मामी ——को——का मिलना पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये।

आगे मामी तुमने तो इतनी छाती कठिन करली कि हमपर थोड़ा भी स्नेह नहीं करती और मामा जी तो मुझको इतना प्यार करते हैं कि जब जैपुर से आये एक चूंदरी बहुत सुन्दर मुझे देगये और अब गाजीपुर गये थे तब एक सुरख बूंद के लहंगे का थान मुझे देगये और अम्मा को

२५) रुपये देगये और तुमने कभी कोई मांगी भी नहीं दी इसतो माई तुम्हारा बड़ाही भरोसा रखते हैं सो दया भाव हमारे ऊपर तुम्हारी भी हो तो बहुत उत्तम है हम मांन्य हैं हमारा दिया निःफल नहीं जायगा ॥

शुभ मिती वैशाख शुक्ला ११ सम्वत् १९२०

[उ०पत्र]—मामी की ओर से भानजी को ॥

सिद्धि श्री युत—शुभस्थाने दानपात्र मांनाधिकारिणी भानजी ——को——की आशिष पहुंचे यहां कुशल है वहां कुशल चाहिये ।

आगे तुम्हारी वैशाख शुक्ला ११ की लिखी चिट्ठी आई वृत्तान्त जाना बीबी तेने जो लिखा कि तेरी कठोर छाती है सो तुमने काहे से जाना यह सब चीजें जो जैपुर आदि से लाये वे सब मेरे ही कहने से तुम्हारे यहां पहुंचीं और ऐसी बात बेटी हमको कभी मत लिखना क्यों कि इसमें हमारी औ तुम्हारी दोनों की बुराई है जो बीबी कहतीं तो वाजबी था क्योंकि वे हमारी बड़ी बूढ़ी और मान्य हैं उन्हीं को योग्य है ॥

शुभ मि० आषाढ़ बदी ९ सम्वत् १९२०

[प्र०पत्र]—बहिन की बेटी की ओर से मौसी को ॥

सिद्धि श्रीयुत—शुभस्थानेस्थ मौसी जी यो ग्य—को——का मिलना पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ।

मौसी मेरी माता नें कह दिया है कि जब तक मैं जगन्नाथ जी का दर्शन न कर आऊं तब तक तू जीजी के पास रहियो और जो वह कहै सो करियो सो मौसी जैसी हमारी मा है वैसी ही तुम हो सो माता जी और दादा जी तो जगन्नाथ को यात्रा कर गये और मैं अभी चाची के पास हूं सो तुम कोई सवारी भेज दो तो मैं तुम्हारे पास चली आऊं आगे जैसा मुनासिब हो सो लिखना ॥

शुभ मि० फागुन बदी ११ सम्वत् १९२२

[उ०पत्र]—मौसी की ओर से बहन की बेटी को ॥

स्वस्ति श्रीयुत—शुभस्थानेस्थ बेटी——को——का आशिष पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ।

आगे बीबी फागुन बदी ११ की लिखी चिट्ठी आई वृत्तान्त ज्ञात हुआ और मेरी बहिन जो मेरे पास रहने को तुझ से कह गई है सो ठीक है मुझसे भी

कहला भेजा था परंतु यह तो बता कि तेरीचाची तुझसे कैसा स्नेह करती है मेरे पास आने से वह बुरा तो न मानेगी मैं गाड़ी तेरे लिये भेजूं तो फिरी न आवै और बीबी यह भी तेरा घर है जहाँ खुशी हो वहां रहो चिट्ठी का उत्तर जल्दी भेजियो जब जबाब आवैगा तभी गाड़ी भेजूंगी ॥

शुभ मि॰ फागुन सुदी ७ सम्वत् १९२२

[१८ पत्र] बहनेली की ओर से बहनेली को ॥

स्वस्ति श्रीयुत उचितोपमा योग्य प्यारी बहनेली ——को——की रामराम यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये।

आगे बहिन तुमने कोई चिट्ठी पत्री नहीं लिखी मैं बाट देखती थी और कुछ लड़के बाले होने का भी वृत्तान्त नहीं लिखा और बहिना हमने सुना है कि तुम्हारे यहां शेर का दूध और उसके नख कहीं से आये हैं सो बहिना जो आये हों तो एक नख और जरासा दूध मुझै भी भेज दीजियो मेरे चिरंजीवि गिरधारी को बहुधा नजर कुनजर होजाती है सो जोओ किसी आदमी के हाथों अथवा मैं किसी को भेजूं उसको दे दीजियो

बड़ा उपकार होगा ॥ शुभ मि० वैशाख वदी ३ सम्वत् १९२२

[उ०पत्र]—बहनेली की ओर से बहनेली को ॥

स्वस्ति श्रीयुत शुभस्थानेस्य उचितोपमा योग्य बहनेली——को——की रामराम यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये।

आगे बहिना तेरी वैशाख वदी ३ की लिखी चिट्ठी आई बड़ी खुसी हुई और बहिना तैने शेर का दूध और शेर के नख के लिये लिखा सो मेरे पास दो नख और थोड़ा सा दूध आया था सो नख तो मैंने चिरंजीवि भगवान् दीन के सुवर्ण के कठले में मढ़वा दिये और दूध थोड़ा सा है सो मैं किसी के हाथों उसको तेरे पास भेजदूंगी और नख कहीं से फिर आजांयगे तो अवश्य तेरे पास भेजूंगी बिश्वास रख और कुशल क्षेम की चिट्ठी पत्री भेजती रहियो ॥

शुभ मि० वैशाख शुदी १२ सम्वत् १९२२

प्रथम भाग ॥

पुरुष सम्बन्धी रिश्तेदारों के पत्रों के सिरनामें ॥

१ प्र०पत्र सिद्धि श्री युत महाराज गुरु जी श्री ६
—को—की साष्टांग प्रणाम पहुंचे यहां
कुशल है वहां सदा कुशल चाहिये ॥

२उत्तरपत्र स्वस्ति श्री युत सेवाधिकारी शिष्य—
को—का आशीर्वाद पहुंचे यहां कुशल
है वहां कुशल चाहिये

३ प्र०प० सिद्धि श्री युत सर्वोपमा योग्य पिताजी
श्री ६—को—का साष्टांग प्रणाम पहुंचे
यहां कुशल है वहां सदा कुशल चाहिये

४ उ०प० स्वस्ति श्री चिरंजीवि आज्ञानुकूल—को
—की आशिष पहुंचे यहां कुशल है
वहां सदा कुशल चाहिये ।

५ प्र०प० सिद्धि श्री दादा भाई श्री ५—को—की
दण्डवत् पहुंचे यहां कुशल है वहां कुशल
चाहिये ॥

६ उ०प० स्वस्ति श्री युत चिरंजीवि छोटे भाई
—को—का आशीर्वाद पहुंचे यहां कु-
शल है वहां कुशल चाहिये ॥

७ प्र०प० सिद्धि श्री सर्वोपमायोग्य दादा जी श्री ४—को—की साष्टांग दण्डवत् पहुंचे यहां कुशल है वहां कुशल चाहिये ॥

८ उ०प० स्वस्ति श्री युत चिरंजीवि पौत्र—कौ—का आशीर्वाद पहुंचे यहां कुशल है वहां कुशल चाहिये ॥

९ प्र०प० सिद्धि श्री युत चाचा जी श्री ५—को—का प्रणाम पहुंचे यहां कुशल है वहां कुशल चाहिये ॥

१० उ०प० स्वस्ति श्री युत चिरंजीवि भतीजे—का—की आशिष पहुंचे यहां कुशल है वहां कुशल चाहिये ॥

११ प्र०प० सिद्धि श्री युत सर्वोपमा योग्य फूफा जी श्री ६—को—की दण्डवत् पहुंचे यहां के समाचार भले हैं वहां के भले चाहिये

१२ उ०प० स्वस्ति श्री युत शालपुत्र चिरंजीवि—को—की आशिष पहुंचे यहां के समाचार भले हैं वहां के भले चाहियें ॥

१३ प्र०प० सिद्धि श्री युत सर्वोपमा योग्य नाना जी श्री६—को—की साष्टांग दण्डवत् पहुंचे

यहां के समाचार भले हैं तुम्हारे भले चाहियें ॥

१४ उ०प० स्वस्ति श्री युत दौहित्र चिरंजीवि—को का आशीर्वाद पहुंचे यहां के समाचार भले हैं तुम्हारे भले चाहिये ॥

१५ प्र०प० सिद्धि श्री युत उचितोपमा योग्य मामा जी श्री५—को—की दण्डवत् पहुंचे यहां के समाचार भले हैं तुम्हारे भले चाहियें

१६ उ०प० स्वस्ति श्री युत भानजे चिरंजीवि—को —को आशिष पहुंचे यहां के समाचार भले हैं वहां के भले चाहियें ॥

१७ प्र०प० सिद्धि श्री युत श्वसुर जी श्री ५—को —की दण्डवत् पहुंचे यहां के समाचार भले हैं वहां के भले चाहियें ॥

१८ उ०प० स्वस्ति श्री युत चिरंजीवि जामाता—को —की आशिष पहुंचे यहां के समाचार भले हैं वहां के भले चाहिये ॥

१९ प्र०प० सिद्धि श्री युत सर्वोपमायोग्य जीजा जी श्री ५—को—की दण्डवत पहुंचे यहां के समाचार भले हैं वहां के भले चाहियें ॥

२० उ०प०स्वस्ति श्री युत ब्राह्मण योग्य—को—
की दण्डवत पहुंचे यहां के समाचार
भले हैं वहां के भले चाहियें ॥

२१ प्र०प०स्वस्ति श्री युत सर्वोपमायोग्य मित्रवर्य
—श्री३ को—का नमस्कार पहुंचे यहां के
समाचार भले हैं वहां के भले चाहियें

२२ उ०प०स्वस्ति श्री युत सर्वोपमायोग्य मित्रवर्य
श्री ३—को—का नमस्कार पहुंचे यहां
के समाचार भले हैं वहां के भले चाहियें

२३ प्र०प०स्वस्ति श्री युत रोग नाशक वैद्य राज
जी श्री ५—को—का प्रणाम पहुंचे यहां
के समाचार भले हैं वहां के भले चा-
हियें ॥

२४ उ०प०स्वस्ति श्री युत—को—की आशिष
पहुंचे यहां के समाचार भले हैं वहां
के भले चाहियें ॥

२५ प्र०प०सिद्धि श्री युत सर्वोपमा योग्य मौसा
जी ५—को—की दण्डवत पहुंचे यहां के
समाचार भले हैं वहां के भले चाहियें ॥

२६ उ०प०स्वस्ति श्री युत चिरंजीवि —को—का

आशीर्वाद पहुंचे यहां के समाचार भले हैं वहां के भले चाहियें ॥

२७ प्र०प०सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्थ सर्वोपमा योग्य सकल गुण सागर समधी जी—को—का नमस्कार पहुंचे यहां के समाचार भले हैं वहां के भले चाहियें ॥

२८ उ०प०सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्थ सर्वोपमा योग्य विराजमान परम पूज्य समधी जी—को—का नमस्कार पहुंचे यहां के समाचार भले हैं वहां के भले चाहियें ॥

२९ प्र०प०सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्थ सर्वोपमा योग्य पतिदेव जी श्री५—को—की यथा योग्य पहुंचे यहां के समाचार भले हैं वहां के भले चाहियें ॥

३० उ०प०स्वस्ति श्री—शुभस्थानेस्थ आज्ञाधीना आनन्द दायिनी गृहणी —को—की यथा योग्य पहुंचे यहां के समाचार भले हैं वहाँ के भले चाहियें ॥

३१ प्र०प०सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्थ उचितोपमा योग्य सेवक पालन कर्त्ता साह जी श्री५

को—की जैगोपाल यहां के समा-
चार भले हैं वहां के भले चाहियें ॥

३२ उ०प०स्वस्ति श्री—सकल कार्य कर्ता—कोसाह
—की जैगोपाल पहुंचे यहां के समा-
चार भले हैं वहां के भले चाहियें ॥

३३ प्र०प०सिद्धि श्रीयुत सकल शास्त्र सम्पन्न पण्डित
जी श्री ५—को—का प्रणाम यहां के
समाचार भले हैं वहां के भले चाहिये ॥

३४ उ०प०स्वस्ति श्री—गुण ग्राहक—को—की
आशिष यहां के समाचार भले हैं वहां
के भले चाहियें ॥

३५ प्र०प०स्वस्ति श्रीयुत—शुभस्थानेस्थ धर्म्म मूर्त्ति
मुंशी जी श्री ३—साहिब—को—का
आशीर्वाद यहांके समाचार भले हैं वहां
के भले चाहियें ॥

३६ उ०प०सिद्धि श्रीयुत—शुभस्थानेस्थ सर्वोपमा
योग्य मिश्रजी—को—कोपालागन पहुंचे
यहां के समाचार भले हैं वहां के भले
चाहियें ॥

३७ प्र०प०जनाब खां साहब बहादुर—को—का

सलाम पहुंचे यहां के समाचार भले हैं
वहां के भले चाहियें ॥

३८ प्र०प०जनाब शेखजी साहिब बहादुर—को—
का सलाम पहुंचे यहां के समाचार भले
हैं वहां के भले चाहियें ॥

३९ प्र०प०जनाब मीर साहब बहादुर—को—का
सलाम पहुंचे यहां के समाचार भले हैं
वहां के भले चाहियें ॥

४० प्र०प०जनाब मिरजा जी साहिब—को—का
सलाम पहुंचे यहां के समाचार भले हैं
वहां के भले चाहियें ॥

४१ प्र०प०जनाब मौलवी साहब—को—का सलाम
पहुंचे यहां के समाचार भले हैं वहांके
भले चाहियें ॥

४२ प्र०प०जनाब मास्टर साहब—को—का सलाम
पहुंचे यहां के समाचार भले हैं वहां के
भले चाहियें ॥

दूसरा भाग ॥

स्त्री सम्बन्धी पत्रों के सिरनामे ॥

१ प्र०प० सिद्धि श्री—शुभस्थाने सर्वोपमा योग्य सर्व भाव पूजनीया गुरुपत्नी—को—की साष्टांग दण्डवत् अत्र कुशलं तत्रास्तु ॥

२ उ०प० स्वस्ति श्री—शुभस्थाने आज्ञानुयायी गुरु भक्ति परायण—को—की आशिष पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु ॥

३ प्र०प० सिद्धि श्री मति—सर्वोपमा योग्य माता जी श्री ६—को—की दण्डवत् पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु ॥

४ प्र०प० स्वस्तिश्री चिरंजीवि चरण सेवाधिकारी पुत्र—को—की आशिष पहुंचे अत्र कुशल तत्रास्तु ॥

५ प्र०प० सिद्धि श्री मति दादी जी श्री ६—को—की साष्टांग प्रणाम पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु ॥

६ उ०प० स्वस्ति श्री आज्ञानुकूल पौत्र—को—की आशिष पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु ॥

७ प्र०प० स्वस्ति श्रीयुत उचितोपमा योग्य भाभी
साहब—को—की प्रणाम पहुंचे अत्र
कुशलं तत्रास्तु ॥

८ उ०प० स्वस्ति श्रीयुत—शुभस्थानेसर्वोपमायोग्य
देवर—को—की आशिष पहुंचे अत्र
कुशलं तत्रास्तु ॥

९ प्र०प० सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्थ सर्वोपमा-
योग्य चाची जी श्री ५—को—की साष्टाङ्ग
दण्डवत् अत्र कुशलं तत्रास्तु ॥

१० उ०प० स्वस्ति श्रीयुत चिरंजीवि सुखदाता पुत्र
तुल्य—को—की आशिष पहुंचे अत्र
कुशलं तत्रास्तु ॥

११ प्र०प० सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्थ सर्वोपमा
योग्य फूफी जी श्री ६—को—की दण्ड-
वत् अत्र कुशलं तत्रास्तु ॥

१२ उ०प० स्वस्ति श्री युत—शुभस्थानेस्थ सर्व प्रिय
चिरंजीवि भतीजे—को—की आशिष
पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु ॥

१३ प्र०प० सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्थ उचितोपमा
योग्य मामी जी—को—की राम राम
पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु ॥

१४ उ०प०स्वस्ति श्री चिरंजीवि भानजे जी—को
        को आशिष पहुंचे अत्र कुशलं तत्रास्तु ॥
१५ प्र०प०सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्थ सर्वोपमा-
        योग्य मानो जी—को—की प्रणाम यहां
        आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥
१६ उ०प०स्वस्ति श्री युत शुभस्थानेस्थ चिरंजीवि
        आज्ञानुकूल दौहित्र—को—की आसीस
        पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द
        चाहिये ॥
१७ प्र०प०सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्थ सर्वोपमा-
        योग्य सास जी श्री ५—को—की प्रणाम
        पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द
        चाहिये ॥
१८ उ०प०स्वस्ति श्री युत शुभस्थानेस्थ पूज्य पद—
        को—का आशीर्वाद पहुंचे यहां आनन्द
        है वहां आनन्द चाहिये ॥
१९ प्र०प०सिद्धि श्री युत शुभस्थानेस्थ उचितोपमा-
        योग्य बड़ी साली—को—की यथोचित्
        राम राम पहुंचे यहां आनन्द है वहां
        आनंद चाहिये ॥
२० उ०प०स्वस्ति श्रीयुत—शुभस्थानेस्थ सर्वोपमा

योग्य बहनोई—को—की आशिष पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

२१ प्र०प० स्वस्ति श्री युत—शुभस्थानेस्य सर्व भाव पूज्य छोटी बहिन—को—की आशिष पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

२२ उ०प० सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्य सर्वोपमा योग्य दादा भाई—को—का मिलना पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

२३ प्र०प० सिद्धि श्रीयुत—शुभस्थानेस्य उचितोपमा योग्य मौसी जी—को—का प्रणाम यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

२४ उ०प० स्वस्ति श्रीयुत शुभस्थानेस्य सर्वोपमायोग्य चिरंजीवि—को—की आशिष पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

२५ प्र०प० सिद्धि श्रीयुत—शुभस्थानेस्य उचितोपमा समधिन—को—की राम राम यहां आ-नन्द है वहां आनन्द चाहिये

२६ उ०प० सिद्धि श्रीयुत—शुभस्थानेस्य उचितोपमा योग्य समधी जी—को—की राम राम

यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

२७ प्र०प० स्वस्ति श्रीयुत शुभस्थानेस्थ विराजमान पतोहू—को—की आशिष यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

२८ उ०प० सिद्धि श्रीयुत शुभस्थानेस्थ उचितोपमा योग्य ससुर जी—को—की यथोचित प्रणाम यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

२९ प्र०प० स्वस्ति श्रीयुत—शुभस्थानेस्थ विराजमान परम पूज्य बेटी—को—की आशिष पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

३० उ०प० सिद्धि श्रीयुत—शुभस्थानेस्थ सर्वोपमा योग्य पिता जी श्री ६—को—का मिलना पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

३१ प्र०प० स्वस्तिश्रीयुत—शुभस्थानेस्थ सर्वभावपूज्य छोटी साली—को—की आशिष पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

३२ उ०प० सिद्धिश्रीयुत शुभस्थानेस्थ सर्वोपमायोग्य जीजा जी श्री ५—को—का मिलना

पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द
चाहिये ॥

२३ प्र०प० सिद्धि श्रीयुत—शुभस्थानेस्थ उचितोपमा
योग्य मौसेयी बहन—को—का प्रणाम
यहां आनंद है वहां आनंद चाहिये ॥

२४ उ०प० स्वस्तिश्रीयुत—शुभस्थानेस्थ उचितोपमा
मौसिया भाई—को—का मिलना यहां
आनंद है वहाँ आनंद चाहिये ॥

तीसरा भाग ॥

स्त्रियों की ओर से स्त्रियों के पत्रों के विरनामे ॥

१ प्र०प० स्वस्ति श्रीयुत आज्ञानुकूल बेटी—को—
की आशिष पहुंचे यहां आनंद है वहां
आनंद चाहिये ॥

२ उ०प० सिद्धिश्रीयुत—शुभस्थानेस्थ सर्वोपमा यो
ग्यमाजी श्री—को—का मिलना पहुंचे
यहां आनंद हैं वहां आनंद चाहिये ॥

३ प्र०प० स्वस्ति श्रीयुत शुभस्थानेस्थ कुलोत्तमापोती
बेटी—को—की आशिष पहुंचे यहां
आनंद है वहां आनंद चाहिये ॥

४ उ०प०सिद्धि श्रीयुत—शुभस्थानेस्य सर्वोपमा योग्य दादीजी श्री ६—को—का मिलना पहुंचे यहां आनंद है वहां आनंद चाहिये ॥

५ प्र०प० सिद्धि श्री युत — शुभस्थाने विराजमान ताईजी श्री ५—को—का मिलना पहुंचे यहां आनंद है वहां आनंद चाहिये ॥

६ उ०प०स्वस्ति श्रीयुत—शुभस्थानेस्य बेटी—को की आशिष पहुंचे यहां आनंद है वहां आनंद चाहिये ॥

७ प्र०प०सिद्धि श्रीयुत—शुभस्थानेस्य उचितोपमा योग्य जिठानी जी श्री ५—को—को पैरों पड़ना पहुंचे यहां आनंद है वहां आनंद चाहिये ॥

८ उ०प०स्वस्ति श्री युत—शुभस्थाने उचितोपमा योग्य देवरानी—को—का मिलना पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

९ प्र०प०स्वस्ति श्री युत—शुभस्थाने विराज मान भावज—को—का मिलना पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

१० उ०प०सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्य विराज मान

कुल मान्या ननद —कों— का पैरों पड़ना पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

११ प्र०प०सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्थ सर्वोपमा योग्य नानी जी—को—का मिलना पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

१२ उ०प०स्वस्ति श्री युत—शुभस्थाने परम पूज्या भेवती बेटी—को—को आशिष पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

१३ प्र०प०सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्थ उचितोपमा योग्य मामी—को—का मिलना पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

१४ उ०प०स्वस्ति श्री युत—शुभस्थानेस्थ मानाधिकारिणीभानजी—को—को आशिषपहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

१५ प्र०प०सिद्धि श्री युत—शुभ स्थानेस्थमौसी जी श्री ५—को—का मिलना पहुंचे यहां आनन्द है वहां आनन्द चाहिये ॥

१६ उ०प०स्वस्तिश्रीयुत—शुभस्थानेस्थ बेटी—को—को आशिष पहुंचे यहां आनंद है वहां आनंद चाहिये ॥

१७ प्र०प०सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्य सर्व भाव पूजा पात्र फूफी—को—का मिलना पक्षुंचे यहां आनंद है वहां आनंद चाहिये ॥

१८ उ०प०स्वस्ति श्री युत—शुभस्थानेस्य सर्व प्रकार पूज्या भतीजी—को—की आशिष पक्षुं-चे यहां आनंद है वहां आनंद चाहिये ॥

१९ प्र०प०सिद्धि श्री युत—शुभस्थाने सर्वोपमायोग्य सास जी—को—का पैरों पड़ना पक्षुंचे यहां आनंद है वहां आनंद चाहिये ॥

२० उ०प०स्वस्तिश्रीयुत—शुभस्थानेस्य आज्ञानुचारी पतोह्र—को—की आशिष पक्षुंचे यहां आनंद है वहां आनंद चाहिये ॥

२१ प्र०प०स्वस्ति श्री युत—शुभस्थानेस्य सर्वोपमा योग्य प्यारी बहनेली—को—की राम राम पक्षुंचे यहां आनंद है वहां आनंद चाहिये ॥

२२ उ०प०स्वस्ति श्री युत—शुभस्थानेस्य उचितोपमा योग्य बहनेली—को—की रामराम पक्षुंचे यहां आनंद है वहां आनंद चाहिये ॥

१३ प्र०प०सिद्धिश्रीयुत—शुभस्थाने सर्वोपमा योग्य बड़ी समधन को छोटी समधन—की राम राम पहुंचे यहां आनंद है वहां आनंद चाहिये ॥

१४ उ०प०सिद्धि श्री युत—शुभस्थानेस्थ उचितोपमा योग्य छोटी समधन—को—की राम राम पहुंचे यहां आनंद है वहां आनंद चाहिये ॥

नातेदारी ॥

पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
गुरू	गुरुपत्नी	भाई	भावज
परदादा	परदादी	भतीजा	भतीजी
दादा	दादी	बहनोई	बहन
ताऊ	ताई	भानजा	भानजी
बाप	माता	बेटा	बहू
तयेरा भाई	तयेरी बहिन	पोता	पोती
चाचा	चाची	परपोता	परपोती
चचेरा भाई	चचेरी बहिन	दामाद	बेटी
फूफा	फूफी	नवासा	नवासी
फुफेरा भाई	फुफेरी बहिन	ससुर	सास
परनाना	परनानी	शाला	सरहज
नाना	नानी	साढ़ू	साली
मामा	मामी	खसम	जोरू
मुमेरा भाई	मुमेरी बहिन	जेठ	जेठानी
खालू	खाला	जिठौता	जिठौतिन्
खलेरा भाई	खुलेरी बहिन	देवर	" रानी
		देवरौता	
		नन्दोई	

इति ॥